श्री कुबेर चालीसा

श्री गणेशाय नमः

श्री स्वामी समर्थाय नमः

जयति शम्भु सुत गौरी नंदन।
विन्घ हरन नासन भव फंदन।।१।।
जय गणनायक जनसुखदायक।
विश्वविनायक बुध्दिविधायक।।२।।
ऋध्दि सिध्दि सहित जय सुखदाता।
संकट हरो हमरी बनके माता।।३।।
जय श्री सकलबुध्दि बलरासी।
जय सर्वज्ञ अमर अविनासी।।४।।
जय जय जय वीणाकर धारी।
करती सदा सुहंस सवारी।।५।।
रुप सरस्वती माता।
सकलविश्व अन्दर विख्याता।।६।।
जय शिव सखा दीन दयाला।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला।।७।।
विविध रत्न सुवन शोभत काये।
कानन कुण्डलमनीमन भावे।।८।।
देवन जबहीं जाय पुकारा।
तब ही दुख प्रभु आप निवारा।।९।।
दिशा से राखे आठ दिक्पाल।
कुबेर तूही उत्तर के महिपाल।।१०।।
तुम्हरी महिमा बुध्दि बढाई।
शेष सहस्त्रमुख सके न गाई।।११।।

मैं मतिहीन मलीन दुखारी।
करहूं कौन विधि विनय तुम्हारी।।१२।।
निधि का दाता भव शाप त्राता।
दारिद्र ऋण को दूर भगाता।।१३।।
अब प्रभु दया दीन पर कीजै।
अपनी भक्ति शक्ति कछु दीजै।।१४।।
जय जय जय अनन्त अविनाशी।
करत कृपा सब के घटवासी।।१५।।
जय जय जय प्रभु ज्योति स्वरुपा।
निर्गुण ब्रह्म अखण्ड अनूपा।।१६।।
जय जय जय कुबेर धन संचयकारी।
पालन करे जय दु:खहारी।।१७।।
तुम अनाथ के नाथ सहाई।
दीनन के हो सदा सहाई।।१८।।
ब्रह्मादिक तव पारन पावैं।
सदा ईश तुम्हरो यश गावैं।।१९।।
आदि अनादि अभय वर दाता।
विश्व विदित भव सुख का दाता।।२०।।
ध्यान धरे श्रुति शेष सुरेशा।
सब ईश्वर लकी तुम्हरी भेषा।।२१।।
धनाढ्य नाम है अपरम्पारा।
इस भगत को तेरा ही सहारा।।२२।।
आशीर्वाद तुम्हारा बहुत ही हितकारी।
चौंसठ जोगन रहे आज्ञाकारी।।२३।।

जो तुम्हारे नित पाँव पलोटत।
आठों सिध्दि ताके चरणा में लोटत।।२४।।
सिध्दि तुम्हारी सब मंगलकारी।
जो तुम पे जावे बलिहारी।।२५।।
जय जय जय कुबेर धनाढ्य श्रीमती।
यक्षेन्द्र शिवसखा तूही निधि पति।।२६।।
जय जय जय पद्मधारी पूर्णाय लक्ष्मी सेवक।
रत्नधारी विमान सेवी तू ही निति नायक।।२७।।
जय जय जय यक्षराज कुलोध्दारी कोषाधिपति।
विशारद अश्वारूढतव कुशाग्रमति।।२८।।
जय जय जय वैश्रवण गदाधारी धनधान्य पाली।
दु:खहारी ऋणमोची करो तुम सबकी रखवाली।।२९।।
जय जय जय महाप्राज्ञी इलाविदसुत परम संतोषी।
पुष्पकधारी संकटमोची तू ही अल्कापुर निवासी।।३०।।
लखि प्रेम की महिमा भारी।
ऐसे सुंदर कुबेर हितकारी।।३१।।
कुबेरजी अंश इस सृष्टी का।
सुखी करे भाव उसी दृष्टी का।।३२।।
निशि दिन ध्यान धरे जो कोई।
ता सम धन्य और नहीं कोई।।३३।।
नाम अनेकन यक्ष तुम्हारे।
भक्तजनों के संकट तारे।।३४।।
प्रेम सहित जो कीर्ती गावई।
सदाही सकलधन संपत्ति पावई।।३५।।

भूलचूक करे क्षमा हमारी।
दर्शन दीजै दशा निहारी।।३६।।
चारिक वेद प्रभु के साखी।
तुम भक्तन की लज्जा राखी।।३७।।
नवमी को पाठ करे जो कोई।
तुम भक्तन को अभय वर देई।।३८।।
तीन लोक में आप विराजे।
सब देवोंसंघ यक्षराज पूजावे।।३९।।
पढके कुबेर चालीसा इस भगत को करे धनवान।
स्वामीजी की कृपासे वर देहि महान।।४०।।
।। श्री कुबेरार्पणमस्तु।।
शुभं भवतु । शुभं भवतु ।। शुभं भवतु ।।